स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा - तृतीय खण्ड
(षष्ठ पत्र - प्रयोजनमूलक हिन्दी)

- डॉ० मुन्ना साह
हिन्दी विभाग
जे० के० कॉलेज, बिरौल

प्रयोजनमूलक हिन्दी : अभिप्राय और परिभाषा

किसी भी भाषा का उद्भव और विकास सामाजिक सरोकार पर आधारित होता है। समाज के विभिन्न प्रयोजनों को संप्रेषित करने के लिए भाषा की आवश्यकता पड़ती है। भाषा के दो प्रमुख आयाम होते हैं - (1) सौंदर्यपरक आयाम (2) प्रयोजनपरक आयाम। सौंदर्यपरक के अन्तर्गत मनुष्य के सौंदर्यपरक अनुभूतियों के आधार पर की गई सर्जनात्मकता होती है। जैसे - कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक आदि। भाषा के प्रयोजनपरक आयाम का अभिप्राय सामाजिक आवश्यकताओं और जीवन की उस व्यवस्था से होता है, जो व्यक्तिपरक होकर भी समाज सापेक्ष होता है। जब भाषा का प्रयोजन किसी कार्य-क्षेत्र से संबंधित हो। यथा प्रशासन, व्यवसाय, विज्ञान तथा तकनीकी आदि क्षेत्र, तो सामाजिक व्यवहार में विशिष्ट प्रयोजन के लिए प्रयुक्त विशिष्ट भाषा रूप प्रयोजनमूलक भाषा कहलाता है।

'प्रयोजन' शब्द के लिए अंग्रेजी में (Functional) फंक्शनल शब्द का प्रयोग किया जाता है तथा प्रयोजनमूलक हिन्दी के लिए (Functional Hindi) फंक्शनल हिन्दी का। इसे प्रकार्यात्मक, व्यावहारिक तथा कामकाजी हिन्दी की संज्ञा भी दी जाती है।

डॉ० विनोद गोदरे लिखते हैं - "जीवन-जगत की विभिन्न आवश्यकताओं अथवा लोकव्यवहार, उच्च शिक्षा, तंत्र, जीविकोपार्जन आदि के लिए विशेष अभ्यास ज्ञान के द्वारा विशेष शब्दावली में विशेष अभिव्यक्त इकाइयों एवं सम्प्रेषण कौशल से समाज-सापेक्ष व्यवहारिक प्रयोजनों की सम्पूर्ति के लिए प्रयुक्त की जानेवाली विशेष भाषा प्रयुक्तियों को प्रयोजनमूलक हिन्दी कहा जा सकता है।" प्रयोजनमूलक हिन्दी के रूपों का विकास एवं विस्तार स्वतंत्रता के बाद ज्यादा हुआ। आज आधुनिक विषयों तथा ज्ञान-विज्ञान के विविध क्षेत्रों में भी इसका प्रयोग हो रहा है। आधुनिक युग की आवश्यकताएँ प्रयोजनमूलक भाषा रूपों का निर्धारक तत्व है। इस दृष्टि से प्रयोजनमूलक हिन्दी भी व्याप्ति बहुभाषी है। "प्रयोजनमूलक हिन्दी के रूप - बोलचाल, व्यापारिक हिन्दी, कार्यालयी, शास्त्रीय, तकनीकी, साहित्यिक तथा समाजी हिन्दी" - डॉ० भोलानाथ तिवारी

Scanned with CamScanner